DR. SUMAN LAL RAY
Guest Assistant Professor
Deptt. of Sanskrit
S.R.A.P. College, Bara Chakia
BRABU - Muzaffarpur

B.A. (Hons.) Part — I
Sub. — SANSKRIT
Paper — I

5×3=15 Marks

कारक सूत्र-व्याख्या

15. हेतौ (2/3/23)

हेतु (कारण) के अर्थ हेतुनिर्देशक शब्द से तृतीया हो। फल साधन के योग्य (समर्थ) को हेतु कहा जाता है। किसी क्रिया की सिद्धि में द्रव्य, गुण और क्रिया—ये तीनों 'हेतु' हो सकते हैं। जब द्रव्यादि अर्थात् द्रव्य, गुण और क्रिया — ये तीनों क्रिया की सिद्धि में उपकारक होने पर उनमें कोई क्रिया व्यापार न हो, तो वे हेतु कहलाते हैं। और जो क्रिया मात्र का जनक होकर क्रिया की सिद्धि में सहायक होता है वह व्यापार 'करण' कहलाता है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि व्यापार (चेष्टा) के बिना या व्यापार सहित किसी क्रिया के साधक द्रव्य, गुण या क्रिया 'हेतु' कहलाते हैं, पर 'करण' कारक होने से केवल क्रिया का साधक होता है और उसमें व्यापार का होना आवश्यक है। यथा—

(क) द्रव्य हेतु का उदाहरण - दण्डेन घटः भवति (दण्ड घट का हेतु है) - यहाँ दण्ड 'द्रव्य' है। अतः 'दण्डेन' में 'हेतौ' सूत्र से तृतीया हुई। ~~यहाँ व्यापारवान् होने पर भी दण्ड से किसी क्रिया की सिद्धि नहीं होती, इसलिए उसे करण (कारण) नहीं कहा जा सकता।~~

(ख) गुण हेतु का उदाहरण — पुण्येन गौरः (पुण्य के कारण गौर वर्ण) - गौरवर्ण पुण्य के अतिरिक्त कारण से भी हो सकता है, अतः यहाँ गौरवर्ण के लिए पुण्य प्रकृष्टोपकारक (करण) नहीं है। 'पुण्य' गौरवर्ण रूप गुण का 'हेतु' है, अतः उससे तृतीया हुई।

(ग) क्रिया हेतु का उदाहरण — पुण्येन दृष्टो हरिः (पुण्य से हरि के दर्शन हुए) - यहाँ दर्शन क्रिया का कारण पुण्य है, अतः यह हेतु है, हेतुबोधक शब्द 'पुण्य' से तृतीया हुई। यहाँ पुण्य दर्शन-क्रिया का साधक तो है, पर उसमें कोई व्यापार न होने से वह 'करण' नहीं है।

क्रमशः जारी